सेप्टकि टैंकों के मानदंड पूरे होंगे

संदर्भ

केंद्रीय पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के अनुसार, सेप्टकि टैंक और एकल गड्ढा (single pits) सुरक्षति स्वच्छता प्रौद्योगकियिाँ हैं जो सतत् वकिास लक्ष्यों द्वारा नरि्धारति मानकों को पूरा करती हैं।

सर्वेक्षण का परणिाम

- राष्ट्रीय वार्षकि ग्रामीण स्वच्छता सर्वेक्षण (NARSS) 2018-19 के आँकड़ों के आधार पर नष्किर्ष नकिाला गया है कि केवल 26% ग्रामीण जुड़वाँ-लीच गड्ढों (tween-leach pits) और ग्रामीण शौचालयों का उपयोग करते हैं। ग्रामीण शौचालयों के अवशेष (जो दो अंतर्संबंधति गड्ढों का उपयोग नहीं करते हैं) एक नई भयावह स्थतिि उत्पन्न कर सकते हैं।
- ट्वनि पटि का उपयोग न करना स्वास्थ्य और पर्यावरण के लयि हानकिारक हो सकता है और नई पीढ़ी को मैनुअल स्कैवेंजगि की ओर धकेल सकता है।
- सेप्टकि टैंक सबसे लोकप्रयि वकिल्प हैं जसिमें 28% शौचालय एक सेप्टकि टैंक से जुड़े होते हैं जो सोख गड्ढे (soak pit) के साथ होते हैं तथा 6% टैंक बनिा सोख गड्ढे के होते हैं।

केंद्रीय मंत्रालय की प्रतक्रियिा

- मंत्रालय ने अपनी प्रतक्रियिा में कहा है कि सेप्टकि टैंक और एकल गड्ढे सुरक्षति स्वच्छता प्रौद्योगकियिाँ हैं जो सतत् वकिास लक्ष्यों (SDG) द्वारा नरि्धारति मानकों को पूरा करती हैं।
- ट्वनि-लीच पटि शौचालय सबसे कफिायती और सुरक्षति स्वच्छता प्रौद्योगकियिों में से एक हैं और इसे व्यापक रूप से अपनाया गया है।
- मंत्रालय ने स्वीकार कयिा कि देश के सामाजकि स्वरूप तथा जातगित पूर्वाग्रहों को देखते हुए इस तरह के टैंकों को खाली करने और साफ करने के लयि मैनपावर एक बड़ी चुनौती है।
- मंत्रालय इस तरह की समस्या के तकनीकी और उद्यमशील समाधान तैयार करने पर काम कर रहा है।

राष्ट्रीय वार्षकि ग्रामीण स्वच्छता सर्वेक्षण (NARSS) 2018-19

- यह सर्वेक्षण वश्वि बैंक सहायता परयिोजना के तहत एक स्वतंत्र एजेंसी द्वारा स्वच्छ भारत मशिन (ग्रामीण) के लयि कयिा गया था।
- ट्वनि-पटि और सगिल-पटि सस्टिम ट्वनि पटि फ्लश वॉटर सील टॉयलेट यानी दो गड्ढों और पानी उड़ेलकर मल नस्तिारण वाली जल अवरोध प्रणाली पर आधारति शौचालय होता है।
- इन्हें दो गड्ढों वाला इसलयि कहा जाता है क्योंकि इनमें जलमल को इकट्ठा करने के लयि दो गड्ढों की व्यवस्था की जाती है।
- इन दो गड्ढों को बारी-बारी से इस्तेमाल कयिा जाता है। दोनों गड्ढों को एक ओर जंक्शन चैंबर से जोड़ा जाता है।
- गड्ढे की दीवारों में हनीकॉम्ब यानी मधुमक्खी के छत्ते के आकार में ईंटों से चनिाई की जाती है। गड्ढे के तले पर पलस्तर नहीं कयिा जाता और तला मट्टिी का बना होता है।
- शौचालय का इस्तेमाल करने वालों की संख्या को ध्यान में रखते हुए गड्ढे का आकार घटता-बढ़ता है। हर गड्ढे की क्षमता आमतौर पर तीन साल रखी जाती है।
- करीब तीन साल में जब पहला गड्ढा भर जाता है तो जंक्शन चैंबर से उसे बंद कर दयिा जाता है और दूसरे गड्ढे को चालू कर दयिा जाता है।
- मानव मल का जलीय अंश हनीकॉम्ब ढाँचे से होकर ज़मीन में अवशोषति कर लयिा जाता है। दो साल तक बंद रहने के बाद पहले गड्ढे में जमा पदार्थ पूरी तरह सड़कर ठोस, गंधहीन और बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं से मुक्त खाद में परवित्रति हो जाता है।
- इसे खोदकर बाहर नकिाल लयिा जाता है और कृषि तथा बागवानी में इसका उपयोग कयिा जाता है।
- जब दूसरा गड्ढा भी भर जाता है तो उसे भी जंक्शन चैंबर से बंद कर दयिा जाता है और पहले गड्ढे को चालू कर दयिा जाता है। इस तरह दोनों गड्ढों का बारी-बारी से उपयोग कयिा जाता है।

स्रोत : द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/septic-tanks-meet-norms-modws